बाल महाभारत
कक्षा-7 विषय-हिंदी
पाठ– 24 विराट का भ्रम

(घनश्याम मीना)

सार

- राजा सुशर्मा पर विजय प्राप्त की राजा विराट जब नगर में आए तो मालूम हुआ कि राजकुमार उत्तर कौरवों से लड़ने गए हैं तो वे चिंतित हो गए। तब कंक बने युधिष्ठिर ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि चिंता नहीं करें बृहन्नला सारथी बनकर उसके साथ है। तभी दूतों ने आकर बताया कि राजकुमार उत्तर ने कौरवों को हरा दिया है। यह सुनकर विराट हैरान रह गए क्योंकि उन्हें यह आशा नहीं थी कि उनका पुत्र अकेले कौरवों को हरा सकता है।

सार

- खुश होकर विराट ने सैरंध्री को चोपड़ बिछाने के लिए कहते हैं और कंक (युधिष्ठिर) के साथ चोपड़ खेलने लगे | खेलते समय भी बातें होने लगी। खेल में वे अपने पत्र की वीरता की प्रशंसा करते हैं तो कंक बृहन्नला की बड़ाई करने लगते हैं। इस पर क्रोधित होकर विराट ने हाथ का पासा फेंककर कंक के मुँह पर दे मारा, जिससे कंक के मुँह से खून बहने लगा। इतने में दवारपाल ने आकर खबर दी कि राजकुमार उत्तर व बृहन्नला दवार पर खड़े हैं। कंक बने युधिष्ठिर ने दवारपाल को केवल राजकुमार को लाने के लिए कहते हैं। उन्हें भय था कि उन्हें चोट लगी देखकर बृहन्नला बने अर्जुन को कहीं गुस्सा न आ जाए।

सार

- उत्तर ने पिता को नमस्कार किया। उसने जैसे ही युधिष्ठिर की ओर प्रणाम करने के लिए देखा। तो उनके मुख पर से खून बहता देखकर आचर्यचकित रह गया। उसने अपने पिता से पूछा कि उन्हें केसे चोट लगी? पिता के दवारा चोट पहुंचाने की बात सुनकर उसने पिता को कंक से क्षमा मांगने के लिए कहा और बताया कि मैं तो लड़ा भी नहीं। विराट ने कंक के पाँव पकड़कर क्षमा याचना की।

सार

- विराट ने कौरव-सेना को हटाने वाले वीर को बुलाने को कहा। थोड़ी देर सोच-विचार कर अर्जुन ने पहले टाजा विटाट को औट फिर साटी सभा को अपना असली परिचय दे दिया। विराट अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन से करना चाहते हैं पटतु अर्जुन उसे अपनी बेटी जैसी मानते हैं। वे उत्तरा का विवाह अपने पुत्र अभिमन्यु से करने का प्रस्ताव देते है। विराट इसे स्वीकार कर लेते है।